International Journal of Arts & Education Research

संजीव के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्या

Anil Kumar
Research Scholar
Om Sterling Global University
Hisar, Haryana

Dr. Suman Kadyan
Research Supervisor
Assistant Professor
Om Sterling Global University,
Hisar, Haryana

Dr. Madhulika
Research Co-Supervisor
Assistant Professor
Govt. College Hansi,
Hisar, Haryana

सार:

मानव आज जिस युग में से गुजर रहा है, उसे किसी युग की संज्ञा देना बुद्धि से परे है फिर भी गहन चिंतन और मनन से इसी निष्कर्ष पर पहुंच सकते है कि विज्ञान, राकेट आदि की अपेक्षा समस्या युग की संज्ञा देना कहीं अधिक समीचीन होगाI विज्ञान भी आज अपने विशिष्ट गुणों के कारण युद्ध विनाश व संहार की समस्या से युक्त हो गया हैI मनुष्य और समाज में अटूट रिश्ता हैI मनुष्य के जीवन में यदि समस्या नहीं होगी तो मनुष्य का जीवन निर्थक बन जायेगाI समस्याओं ने मनुष्य मनुष्य को अपने जाल में फंसा दिया हैI मनुष्य के जीवन का कोई भी कोना ऐसा नहीं, जहाँ आज समस्याओं का अस्तित्व नहीं हैंI मनुष्य जीवन की समस्याएँ उनकी चित वृर्तियों के साथ साथ निरंतर बढती चली जा रही हैंI मनुष्य की इच्छायें कभी खत्म नहीं होतीI यही इच्छायें जीवन में समस्याओं का जाल सा फैला देती हैI आज के युग में तो समस्याएं इतनी बढ़ गयी है कि जीवन स्वयं एक समस्याओं की श्रृंखला बन गया हैI समस्याओं का स्वरूप आज मकड़ी के उस जाल के समान महसूस होने लगा है जो देखने में तो अलग अलग तंतुमय दिखाई देता है,लेकिन वह एक दुसरे में इतना मिला होता है कि उसे अलग करना सम्भव नही हैI साहित्यकार समाज का महत्ववपूर्ण अंग होने के नाते समाज में घटित होने वाली घटनाओं से वह अपने आप को अलग नही कर सकता जो घटनाएँ वह समाज में देखता है, जिन परिस्थितयों को वह भोगता हैI उन्ही का यथार्थ चित्रण अपने साहित्य में करता हैI संजीव के साहित्य में सामाजिक राजनीतिक आर्थिक धार्मिक समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली हैI जिसका जिक्र निम्नलिखित रूप से किया गया है-

KeyWords - युग, समाज, घटना, साहित्य

1. **सामाजिक समस्या :**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैI मानव अकेला रह सकता हैI वह हमेशा समूह में रहना पसंद नहीं करता हैI समूह में रहते हुए मनुष्य को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता हैI कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है, इसी कारण साहित्य में मानव जीवन की विविध क्रिया कलापों का दर्शन होता हैI मुझे यहाँ डॉ. भास्कर विमल के विचार उचित लगते है, "आज उपन्यास में समाज की प्रगति का हर पहलू प्रतिबिम्ब होता हैI अभिजा तथा सामाजिक समाज का विघटन और आधुनिक युग का आरम्भ, आधुनिक युग के आंतरिक संघर्ष की बढ़ती हुई तीव्रता और पूंजीवाद के विकास से संयुक्त प्रथा के हास् इन सभी का प्रतिनिधित्व उपन्यास में मिलेगाI यही नहीं अब मनोरंजन को छोड़ वे वास्तविक जगत में आ गये हैI यह मानव के सदन या क्रन्दन से वे अबकी बार नही निकल सकतेI समाज के भीतर वर्ग और वर्ग संघर्ष फिर वर्ग के भीतर कुल और कुल का कुल में परिवार और परिवार का अंत तोशला परिवार के भीतर व्यक्ति और व्यक्ति का संघर्ष इन सब पर टिक कर उपन्यासकार की दृष्टी विकसित होती रहीI जिससे उपन्यास में सामाजिक वस्तुओं का अनुपात बढ़ता गयाI

2. जातिभेद की समस्या :

भारतीय समाज में धर्म के साथ-साथ जाति और गोत्र का महत्व हजारों सालों से रहा हैI जिससे मुक्ति पाना असम्भव है आज भारत देश में जातीयता एवं साम्प्रदायिकता की दगघता फ़ैल रही हैI आज समाज में छुआ-छत जाति-पाति कम नही हुई हैI राष्ट्रीय भावना से प्रेरित समाज 'हम एक है' का नारा लगाता है तो दूसरी और अपने-अपने समाज को संघटित करता हुआ दिखाई देता हैI मुझे यहाँ डॉ. देवेश ठाकुर के विचार सार्थक लगते है –"एक ओर राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित भारतीय समाज एक स्वर में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध खड़ा हुआ थाI और दूसरी ओर स्वयं नगर ही नही ग्राम्य और औपलिक स्तर पर ही जातिवाद का 'विषबीज' विकास पर रहा थाI जिससे व्यक्ति व्यक्ति के बीच मतभेद की खाई गहरी होती जा रही थीI और व्यक्ति समाज, जातिगत आधार पर अलग-अलग समूहों में विभाजित और विछित्र होकर परस्पर द्वेष, ईर्ष्या और शत्रुता के भाव को बढ़ता हुआ राष्ट्रीय शक्ति एकता और उदात मानवीयता के आदर्शों को धूमिल कर रहा थाI 'सूत्रधार' उपन्यास में भिखारी ठाकुर को जीवन में हर समय जातिवाद एवं वर्ण व्यवस्था का सामना करना पड़ता हैI भिखारी जगशाला में जाने जगशाला भ्रष्ट होती हैI भिखारी के साथ हुए जाति-भेद को संजीव लिखते है- "उसके सामने ही गंगाजल का छिडकाव कर

मन्त्र से शुद्ध करने के बाद कम फिर से शुरु किया गयाI "चुतिया बना रहे हो" कहानी में चुनाव के वक्त अपनी अपनी बिरादरी की मीटिंग ली जाती हैI मीटिंग में कहा जाता है कि चाहे मर ही क्यों न जावो लेकिन अपने जाति में रहो, जो बाहर जायेगा वह दोगला और उसका हुक्का-पानी बंद करने का आवाहन करना, यह जातपात की समस्या को उजागर करता हैI चुनाव के समय अपना राजनीतिक स्वार्थ साधने डेड गुंडों द्वारा समाज, समाज में जाति भेद करके लोगों के आपसी स्नेह संबंध खत्म करने का प्रयास करते हैI यहाँ संजीव के विचार योग्य लगते है –जाति प्रेम और जाति घृणा का जो जलजला आया कि रहा श भाईचारा भी खत्म हो गयाI"

३ण अशिक्षा :

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान हैI मानव जीवन को सुसंस्कृत करने और उसे विकास के पद पर ले जाने में शिक्षा सहायता करती हैI भारत सरकार शिक्षा प्रसार एवं प्रचार के लिए कार्यरत हैI आधुनिक काल में शिक्षा का महत्व बढ़ गया हैI क्योंकि आज पढ़ने लिखने वालों को साक्षर नहीं मन जाता, बल्कि जिसे कंप्यूटर चलाना आता है, उसे साक्षर कहा जाता हैI आज भी हमारे देश में दलित और गरीबों को अर्थाभाव के कारण शिक्षा से वंचित रहना पड़ा हैI दलितों को प्राचीन काल में स्कूल के बाहर बैठना पड़ता थाI तो आज पिछले बैंचों पर बिठाने की प्रवृति कार्यरत हैI संजीव के कथा- साहित्य में यह समस्या परिलक्षित होती है- जैसे 'प्रेत मुक्ति' कहानी में बैठ अपने पिता के साथ लड़ते रहते हैI इसलिए कि उन्हें अनपढ़ क्यों रखा गयाI अगर उन्हें थोडा भर भी पढ़ाया लिखाया होता, तो ये अपने परिवार का बोझ उठाने में सहायक हो सकते थेI इस कहानी में चलितर के बेटे जागेसर का ब्याह होने पर परिवार में व्यक्ति बढ़ जाता हैI तथा बाप बेटे झगड़ते हैI जागेसर कहता है –'थोडा पढ़ा लिखा दिया होता आपने तो यह नौबत नही आती'I

4. शादी ब्याह :

धर्मशास्त्र के अनुसार विवाह एक धार्मिक कृत्य हैI वैदिक काल में विवाह संस्कार रूप में जाना जाता थाI ऋग्वेद, अर्थर्वेद में वैवाहिक विधि की काव्यमयी अभिव्यक्ति प्राप्त हुई थीI आधुनिक काल में विवाह सभी समाजों की एक सर्वव्यापी संस्था हैI समाज में शादी की रस्म निभाई जाती

हैI हर वर्ग में यह समस्या दिखाई देती हैI शादी ब्याह को लेकर मुझे ज्योत्स्ना शर्मा के विचार सटीक प्रतीत हुए –"लोग जाति-पाति का ध्यान अभी तक इतना रखते है कि कथन से गरीब व्यक्ति भी इसके पालन में अपने आप पर गर्व करता है"I

'जब नशा फटता है' कहानी में माईकल की लड़की तथा जोसेफ के लड़के में प्रेम सम्बन्ध हैI दोनों को शादी के लिए अनुमति देने से पहले जोसेफ, माईकल की जात जानना चाहते हैI जोसेफ अपने ताड़ीखाने के दोस्त भग्गू से कहता है "ईसाई होने के पहले कौन जात का था, माईकल जरा पता तो करोI इस कथन से यही विदित होता है कि जोसेफ तथा माईकल दोनों ने भी धर्म परिवर्तन किया हैI

5. शोषण:

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का स्थान महतवपूर्ण हैI जातीय व्यवस्था के कारण समाज में एकता के लिए बाधा उत्पन्न हो रही हैI समाज में अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, सवर्ण दलित आदि बहुत सरे भेद खड़े हो गये हैI इस सामाजिक भेदा भेद के कारण शोषण की समस्या का निर्माण हुआI बलवंत जाघव के मत है कि "भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था ने शक्ति और घन का अधिकार बनाया हैI ग्रामों में तो दलित युवतियां उनके पंजे में फंसकर उनके विलास के सामग्री बनती हैI

जातीय व्यवस्था तथा वर्ण के आधार पर दलित का शोषण हो रहा है I जमींदार महाजन साहूकार पुलिस कारखाना मालिक प्रशासकीय अधिकारी आदि द्वारा उनको शोषण हो रहा हैI भारतीय समाज व्यवस्था में सवर्ण समाज छल तथा बल से निम्न वर्ग का शोषण करता हैI जी तोड़ मेहनत, मजदूरी नाम मात्र दलितों की जमीन हड़पना, दलितों को कर्ज के बोझ से उनका आर्थिक शोषण करना, जूठे इल्जाम लगाकर हवालात में बंद करना, नारियों का लैंगिक शोषण करना आदि प्रकार के शोषण जमींदार वर्ग करता हैI इसी तथ्य पर डॉ. प्रभा बेनीपुरी के विचार सार्थक लगते है- " जब तक मनुष्य मात्र के प्रति मनुष्य के ह्रदय के प्रेम का भाव आविर्भूत न हो मनुष्यता कैसे मिटेगी ? कहीं व्यक्ति का, कहीं समाज और कहीं राष्ट्र एक दूसरे का शोषण करेंगे हीI

6. जमींदार द्वारा शोषण वर्ग :

जमींदार द्वारा शोषण प्राचीन काल में ज्यादा होता थाI लेकिन आधुनिक काल में शिक्षा व्यवस्था के प्रचार-प्रसार के कारण शोषण कम हुआ हैI लेकिन ग्रामीण भागों में आज भी यही वर्ग गरीब एवं दलित वर्ग को उत्पीड़ित करता हैI 'किशनगढ़ के अहेरी' उपन्यास में जमींदार इनरपति सिंह का बेटा रुपईबल और धन के द्वारा हरिया पर अत्याचार करता है, क्योंकि हरिया दलित हैI और उसकी दूसरी गलती यह है कि वह इयरपति सिंह की बेटी को पेड़ से आम निकालकर देता हैI हलवाह यह खबर बढ़ा चढ़ाकर रुपई को बता देते हैI तब रुपई सम्पूर्ण होने के घमंड में कहता हैं –"यह मजाल की आँखे गडाये मालिक की लड़की पर जिस पत्तल में खाए उसी में छेद करेI हरिया ने जमींदार की बेटी को पेड़ से आम तोड़कर देने की सजा, जान से मर दिया जाता हैI कथा का नायक कहता है-'जिस रस्सी से हरिया अंदर शिकार की हुई साही को बांधकर लाता कमर में मुजरिम की तरह बंधी हुई थीI अब भी पंचनामा बना और लाश फूंक दी गयी और हरिया की 'अनंत कथा' का अंतर वही हो गयाI

7. ठेकेदार द्वारा शोषण :

सरकार की और से अनेक कामों का ठेका दिया जाता हैI और ठेकदार ठेका लेते है जिसके कारण मजदूरों को आसानी से कम धंधा मिलता हैI ठेकेदार कम पैसों में मजदूरों से कम करवा लेते हैंI मजदूरों के मजदूरी का लाभ उठाकर ठेकेदार आर्थिक शारीरिक एवं मानसिक शोषण करते Iतब उन्हें दो वक्त की रोटी मुश्किल से नसीब नही होती हैI मजदूर ठेकेदार के पास आसानी से प्राप्त नहीं होताI संजीव के 'कथा- साहित्य' में ठेकेदार द्वारा मजदूरों का शोषण आसानी से प्राप्त नही होताI संजीव के 'कथा-साहित्य' में ठेकेदार द्वारा मजदूरों का शोषण काफी मात्रा में परिलक्षित होता हैI 'धार' उपन्यास में ठेकेदार आदिवासियों से अवैध कोयला खनन कराते हैI आदिवासी पेट की आग बुझाने के लिए किसी भी प्रकार का काम करने की जोखिम घसने से मिट्टी का एक ठेला गिर जाता हैI फोकल उसमे धंस जाता हैI वह खुद को बचाने के लिए चिल्लाता है, कराहने लगता हैI ठेकेदार से मदद की याचना करता हैI तब ठेकेदार कहता है- 'अरे मार देI अभी जिन्दा ही है, साला मार के भर में नून सब जगहI

'धार' उपन्यास में कोयला अन्चल की संथाल बाह्य शक्तियों के शोषण से अत्याधिक त्रस्त मिलती हैI कड़ी मेहनत के बावजूद उन्हें अभावग्रस्त और फटेहाल जीवन जीना पड़ता हैI उन्हें

उनके कम कारखानदार और अधिकारी ही सम्पन्न होते हैI ढेर सारी कोयला खदाने और छोटे से लेकर चितरंजनदास जैसे बड़े कारखानदारों के बावजूद उनका जीवन मात्र असुरक्षित और अभावग्रस्त मिलता हैI संजीव लिखते है-‘ ठेकेदार अब भी पशुओं की तरह कम करवाने हांककर ले जाते हैI और चूसकर छोड़ देते हैI माफिया अब भी उनसे अमानुविक श्रम कराते हैI और जरा जरा सी बात पर पिटते हैI”

8. पूंजीपतियों द्वारा शोषण :

उद्योग-धंधों का प्रतिनिधित्व करने वाले पूंजीपति वर्ग के लोग अपने कारखानों में मिल-मजदूरी करने वाले लोगों का आर्थिक शोषण करते हैI आज पूंजीपति वर्ग द्वारा नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा हैI मुझे यहा हर कृष्ण रावत के विचार उपयुक्त लगते है- ‘प्रत्येक को अपनी योग्यता के अनुसार कम और अपने आवश्यकता जे अनुसार वेतन मिलना चाहिए”I

“गो-लोक’ कहानी में जेठ घिन्हुदास दान वीरता एवं विन्रमता का प्रदर्शन करते हैI उनके कारखाने में पांच सौ इक्यावन मजदूर काम करते हैI लेकिन एक भी परमानेंट नहीं हैI इस कारखाने का एक मजदूर शफीक सेठ से पूछता है कि आखिर हमको टेम्पररी रखने का मतलब? इसलिए न कि नौकरी जाने के डर से कभी चूं तक न करेंI सारे मजदुर एक होकर सेठ की खिलाफ आन्दोलन छेड़ते हैI वह चालाकी और फरेब से सौ मजदूरों को परमानेंट करने का ऐलान करता हैI तब आपस में झगड़ने लगते हैI संजीव जी लिखते है-“सेठ के आदमियों ने शकील को इतना मारा कि वह लूला हो गया”I

9. नारी शोषण :

भारतीय समाज में प्राचीन काल से पुरुष प्रधान संस्कृति हैI पुरुष की तुलना में आज भी नारी को द्वितीय स्थान दिया जाता हैI प्राचीन काल में तो नारी को चार दीवारों के अंदर ही रहना पड़ता हैI आज आधुनिक युग में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार होने के कारण नारी पढ़ लिखकर अपने अधिकारों के लिए जागृत हो रही हैI पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही हैI लेकिन यह प्रमाण अल्प हैI प्राचीन काल की तरह आज भी नारी के प्रति एक भोग की वस्तु के रूप में देखा जाता हैI गुलाम की तरह उसके साथ बर्ताव किया जाता हैI संजीव

के कथा साहित्य में पारिवारिक, मानसिक-शारीरिक एवं लैंगिक शोषण का चित्रित परिलक्षित होता हैI

उपसंहार :

उपर्युक्त विवेचन को यही स्पष्ट होता है कि संजीव के कथा-साहित्य में सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत जाति भेद, छुआ-छुत, अशिक्षा, ठेकेदार द्वारा शोषण, सवर्णों द्वारा शोषण, इत्यादि व्यसनाघिनता की समस्या, प्रदूषण की समस्या आदि समस्याओं का चित्रण शोधार्थी की दृष्टी का प्रभावात्मक रूप में हुआ हैI

संदर्भिका

1. भास्कर डॉ. विमल –'हिंदी में समस्या साहित्य पृ. 10'
2. ठाकुर डॉ. देवेश – 'मैला आँचल की प्रक्रियाष्पृ. 68
3. वही 'सूत्रधार' पृ. 22
4. वही 'भूमिका अन्य कहानियां' - पृ. 43
5. वही 'प्रेत मुक्ति'- पृ. 23
6. शर्मा डॉ. ज्योत्सना –'शिवानी का हिंदी साहित्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य में' पृ. 164
7. जाधव डॉ. बलवंत साधू- प्रेमचंद साहित्य में दलित चेतनाष्पृ. 183
8. बेनीपुरी डॉ. प्रभा – 'बेनीपुरी जी के नाटकों में सामाजिक चेतना' पृ. 153
9. वही पृ. 56
10. वही 'धार' पृ. 183
11. वही 'धार' पृ. 126
12. रावत हरिकृष्ण 'समाजशास्त्रा विश्व कोश' पृ. 46
13. संजीव- दुनिया की सबसे हसीन औरत' पृ. 66
14. वही पृ. 67